बच्चों का मनोरम आनंदालय

राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज, भटवाड़ी

– गणेश बलोनी व कृष्ण कुमार

उत्तरकाशी के भटवाड़ी ब्लॉक का टकनौर क्षेत्र प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। कई आपदाओं के बाद भी यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य जस का तस बना हुआ है। इसी क्षेत्र में एक गाँव है सैंज उत्तरकाशी गंगोत्री मार्ग पर। ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 4 किमी पहले सड़क के ऊपरी भाग पर एक प्रवेश द्वार बना दिखाई देता है। जिस पर लिखा है ग्राम पंचायत सैंज। ठीक इसके सामने एक साइनबोर्ड लगा है, जिस पर चार विद्यालयों की सड़क मार्ग से पैदल दूरी अंकित है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज यहाँ से 3 किलोमीटर दर्शाया गया है। सड़क मार्ग से ही चढ़ाई शुरू हो जाती है और विद्यालय पर जाकर ही समाप्त होती है। सैंज गाँव सन् 1991 के भूकम्प में अत्यधिक प्रभावित हुआ था। जिसके प्रमाण आज भी यहाँ मौजूद हैं। इस भूकम्पीय आपदा ने यहां के पारम्परिक भवनों को क्षतिग्रस्त किया। आज यहाँ पर कुछ ही भवन पुरानी कला का परिचय देते हुए दिखाई देते हैं। इनकी जगह अब टीन शेडनुमा मकानों ने ले ली है जो कि उस समय की आवश्यकता थी।

इसी त्रासदी में सन् 1950 में स्थापित राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज भी भूकम्प की भेंट चढ़ गया। जिससे यहां पर पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की मुश्किलें बढ़ने लगी। इसका प्रभाव बच्चों के अध्ययन पर भी पड़ने लगा था। इस भयंकर त्रासदी के बाद 1994 में जगदम्बा पाण्डे जी की यहाँ नियुक्ति हुई। 1992 में बी.टी.सी. से प्रशिक्षित जगदम्बा जी की प्रथम नियुक्ति 1993 में रा.प्रा. विद्यालय जसपुर में हुई थी। जब वह वहाँ से स्थानान्तरित होकर यहाँ आई तो उन्होंने पाया यहाँ उनके लिए चुनौतियों का अम्बार है। विद्यालय भवन के नाम पर भूकम्प के प्रभाव से टूटा–फूटा लगभग अवशेष के रूप में पड़ा एक कमरा। शैक्षिक स्तर से पिछड़ रहे बच्चे। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वे अभिभावकों से ताल–मेल स्थापित कर ज़र्जर विद्यालय एवं शैक्षिक व्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने के प्रयास में जुट गईं।

जगदम्बा जी के आने के दो वर्ष बाद सुषुमलता जी अपनी प्रथम नियुक्ति के तौर पर यहाँ आईं। तब से लेकर आजतक लगभग 20 वर्षों से यह दोनों शिक्षिकाएँ यहाँ शिक्षण का कार्य कर रही हैं। कुल 26 छात्र–छात्राओं की संख्या वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज तक आने के लिए सबसे बड़ी समस्या है तीन किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई जिसे यहाँ की अध्यापिकाओं ने अपने जीवन पर कभी हावी नहीं होने दिया। दोनों हमेशा समय से विद्यालय पहुँचती हैं। अपने कार्य में लग जाती हैं। उनके कार्य करने का ढंग बड़ा ही अनोखा है। दोनों शिक्षिकायें पढ़ाने–सिखाने की जटिल प्रक्रिया को बड़ी सरलता एवं स्वाभाविक तौर से संपन्न करती हैं। वे बच्चों के साथ ज़मीन पर बैठकर बड़ी सहजता एवं मित्रवत तरीके से बच्चों के साथ बातचीत करती हैं, जिसका प्रभाव बच्चों पर भी स्पष्टतः देखा जा सकता है। जिस देश में बच्चे स्कूल तक नहीं जाना चाहते हैं, वहीं इस विद्यालय के बच्चे तब–तक विद्यालय में रुकते हैं, जब तक दोनों शिक्षकाएँ विद्यालय में उपस्थित होती हैं। आधे दिन के स्कूल के दिन भी बच्चे जल्दी घर जाने को तैयार नहीं होते कहते हैं –''मैडम जी हम हल्ला नहीं करेंगे और चुपचाप यहीं बैठकर अपना काम करेंगे।'' यह वाक्य दर्शाता है शिक्षक एवं बच्चों के बीच पनप रहे अपनेपन को। जिसके अभाव में शिक्षण जैसा नैसर्गिक कार्य संपन्न हो ही नहीं सकता है।

बच्चों एवं अभिभावक के साथ दोनों शिक्षिकाओं का आपसी तालमेल गजब का है। वह कार्यालयी संबंध को दरकिनार कर दो सहेलियों की तरह आपस में व्यवहार करती हैं। जिससे दोनों एक–दूसरे से अपनी कठिनाइयों को बेझिझक साझा कर पाती हैं। उन्हें बड़ा बोझिल एवं उबाऊ लगता है कि एक सूचना आदान–प्रदान का कार्य करे और दूसरा पढ़ाए। इसलिए दोनों मिलकर बच्चों को पढ़ाती हैं। कार्यालय से संबंधित किसी मुश्किल समस्या का निबटारा वे दूसरे विद्यालयों की सहयोगियों के साथ मिलकर निपटा लिया करती हैं। विद्यालय प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष बताते हैं कि ''जब–जब इन दोनों शिक्षिकाओं का प्रमोशन हुआ गाँव के लोगों व अभिभावकों ने दोनों अध्यापिकाओं से निवेदन किया कि वे हमारे बच्चों को छोड़कर न जाएं। गांववासियों का प्यार व विश्वास देखकर अपना प्रमोशन बच्चों के हित में छोड़ा और इसी विद्यालय में रहना स्वीकार किया।''

जिस देश में बच्चे स्कूल तक नहीं जाना चाहते हैं, वहीं इस विद्यालय के बच्चे तब–तक विद्यालय में रुकते हैं, जब तक दोनों शिक्षकाएँ विद्यालय में उपस्थित होती हैं। आधे दिन के स्कूल वाले दिन भी बच्चे जल्दी घर जाने को तैयार नहीं होते और कहते हैं –''मैडम जी हम हल्ला नहीं करेंगे और चुपचाप यहीं बैठकर अपना काम करेंगे।''

इस विदयालय की शुरूआत भी अनोखे ढंग से होती है। अध्यापिकाएं बच्चों से पहले विद्यालय आती हैं। आकर वह बोर्ड पर पूरे दिन की कार्य की रूप–रेखा लिख देती हैं। जिसे बच्चे अपने तरीके से उन कार्यों को संपादित करते हैं। यह कार्य होता है, प्रार्थना करना एवं करवाना। जिसमें समाचार, समूहगान, कहानी, एवं कविता का पाठ करना। विद्यालय की साफ़–सफ़ाई का ध्यान रखना। विद्यालय की पूरी गतिविधियों को बच्चे अपने ही ढंग से पूरा करते हैं। शिक्षिका का कार्य मात्र सुगमकर्ता का होता है। उनका मानना है कि बच्चे जब स्वविवेक से कार्य करते हैं तो उनमें श्रम के प्रति महत्व एवं सहयोग की भावना का विकास होता है।

गतिविधि के अलावा विद्यालय में शिक्षण कार्य सत्र टी.एल.एम. द्वारा संपादित किया जाता है। जो कि कुछ बने–बनाए हैं। तथा कुछ का निर्माण अध्यापिकाओं ने बच्चों के सहयोग से बनाया है। बच्चों की सुविधा के लिए दीवारों को रंग कर उन पर गिनती, पहाड़े, शरीर के अंगों के नाम चित्रों के साथ हिन्दी एवं अंग्रेजी की वर्णमाला दी गई है। जिनका उपयोग बच्चे अपनी रुचि के अनुसार करते हैं।

विद्यालय में केवल पढ़ाई एवं अनुशासन का ही माहौल नहीं है। उनके खेलने की भी समुचित व्यवस्था की गई है। यहां अन्य विद्यालयों की तरह वह पारंपरिक रवैया नहीं अपनाया जाता कि बच्चे को घर से आते ही पढ़ने के लिए बिठा दिया जाय। पहले सब मिलकर बाल गीत गाते हैं। तत्पश्चात् बच्चे अपनी रुचि का खेल खेलते हैं। खेलों में प्लास्टिक के सी–सॉ झूले हैं जो बच्चों को काफी आकर्षित करते हैं। कुल मिलाकर यहाँ पढ़ाने एवं सिखाने की क्रिया को मनोरंजक तरीके से संपन्न किया जाता है। शिक्षा एवं बच्चों के निर्माण में लगे यहाँ के शिक्षक अपने को किसी दायरे में बाँध कर नहीं रखते। वह सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ते हैं। जब भी समाज पर कोई विपदा आती है यह लोग हमेशा लोगों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे कई बेहतर रिश्तों की बावत बहुत से वाकये इस विद्यालय के विद्यालय प्रबन्धन समिति के लोग बताते हैं। वर्ष 2013 की भीषण आपदा के दौरान कुछ शिक्षकों के साथ इस विद्यालय के शिक्षकों ने भी अपने विद्यालय को खोले रखा। अभिभावकों ने शिक्षकों के रहने का प्रबन्ध गाँव में ही किया। साथ ही विद्यालय के लिए आवश्यक पठन सामग्री व अन्य जरूरी सामान के साथ शिक्षिकाओं का सामान लेने के लिए गांव के लोग गये और टूटे फूटे पहाड़ी रास्तों से पैदल पार कर गाँव तक पहुँचाया। अभिभावक बताते हैं कि शिक्षिकाओं ने उस वक्त अपने घर परिवार की चिन्ता किए बगैर विद्यालय को अतिरिक्त समय देकर बच्चों को पढ़ाई के अलावा अन्य क्रियाकलाप जारी रखे। जिससे बच्चे उस भीषण आपदा के भय से निकलकर सामान्य दिनचर्या में आ सके। अभिभावकों का कहना है कि उस दौरान विद्यालय सुबह आठ बजे से सायं चार बजे तक लगता था वो भी बच्चों के कहने पर। उनका कहना है कि हमारे बच्चे हम से ज्यादा अपनी मैडम और सर से प्यार करते हैं।